वन उत्पादकता संस्थान, रांची

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)

(पर्यावरण,वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय,भारत सरकार की एक स्वायत निकाय)

रांची – गुमला राष्ट्रीय राजमार्ग – 23, रांची (झारखण्ड) – 835303

आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत

स्वच्छता:नदियों की सफाई में सामुदायिक भागीदारी

विषय पर व्याख्यान

दिनांक : 10.12.2021

वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के शासनादेश एवं भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद, देहरादून के निर्देश पर वन उत्पादकता संस्थान, रांची द्वारा आजादी का अमृत महोत्सव कार्यक्रम के अंतर्गत दिनांक 10.12.2021 को संस्थान के निदेशक के प्रखर नेतृत्व में स्वच्छता:नदियों की सफाई में सामुदायिक भागीदारी" विषय पर भौतिक एवं आभासीय मंच द्वारा कोविड–19 के निर्देशों का पालन करते हुए एक व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसमे मुख्य अतिथि वक्ता सेवा निवृत प्रधान मुख्य वन संरक्षक, झारखंड डा. एच.एस.गुप्ता के व्याख्यान से संस्थान एवं संस्थान के सभी केंद्रों के अधिकारी एवं कर्मचारी लाभान्वित हुए।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए श्री अंशुमन दास वैज्ञानिक - बी ने कार्यक्रम को उपयोगी बताते हुए डा. एच.एस.गुप्ता के विशाल शैक्षणिक योग्यता एवं अनुभवों का परिचय दिया तथा संस्थन के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी से आज के विषय पर प्रकाश डालने के लिए आमंत्रित किया।

संस्थान के निदेशक डा. नितिन कुलकर्णी ने बताया कि डा. एच.एस.गुप्ता किसी परिचय के मोहताज नही और ये विशिष्ठ तथा दुर्लभ वन अधिकारियों में से एक है। उन्होने भारत

सरकार एवं भा.वा.अनु.शि.प. द्वारा निर्धारित आजादी का अमृत महोत्सव के कार्यक्रम की चर्चा करते हुए आज के विषय को समसामयिक एवं आम व्यक्ति से जूड़ा कार्यक्रम बताया। आजादी के 75 साल के उपलक्ष में तय कार्यक्रमों की उपयोगिता एवं महत्व की चर्चा करते हुए उन्होने बताया कि इस कार्यक्रम के द्वारा जागरुकता की एक अच्छी पहल साबित होता दिख रहा है। नदियों की स्वच्छता की आवश्यकता बताते हुए उन्होने संस्थान द्वारा महानदी के लिए तैयार किए गए 13 डी.पी.आर. की भी चर्चा की। ठोस आधारित कचरा प्रबंधन की आवश्यकता की चर्चा करते हुए रासायनिक कचरा, खेती अवशेष द्वारा प्रदूषण की चर्चा की एवं महात्मा गांधी के स्वच्छता अभियान, नमामी गंगे, भागिरथी परियोजना, निर्मल धारा आअदि कार्यक्रमों की भी विस्तार से चर्चा की। डा. एच.एस.गुप्ता को एक निपुण जल प्रबंधन के योग्यता रखने वाले को सुनकर लाभ उठाना चाहिए।

मुख्य वक्ता डा.एच.एस.गुप्ता ने स्वच्छता के महत्व को बताते हुए समुदाय आधारित जल प्रबंधन के लिए भूत में किए गए कार्यों से सीख लेते हुए वर्तमान के शोध कार्यों को तर्क संगत बनाने एवं भविष्य के फलाफल का भी ध्यान रखने की सलाह दी, किसी कार्य की सफलता उसके प्रदर्शन से स्पष्ट होती है। परियोजना से जुड़े होने की बात बताते हुए उन्होने जल संसाधन के अपने अनुभवों से मंच को अवगत कराया। कार्य की मात्रा और गुणवत्ता का ख्याल रखकर ही परियोजना पर काम करने की नसीहत दी। जल, जंगल जमीन को पारिस्थितिकी बताते हुए परियोजना में समुदाय को शामिल करने पर बल दिया। जल पुरुष, पन बिजली परियोजना के लिए निर्मित डैम की उपयोगिता की चर्चा

की एवं जनजातियों के जीवन स्तर सुधारने के उपाय भी बताए। उन्होने जंगल द्वारा प्रदत्त जल को सबसे शुद्ध बताया। निगरानी समितियों का गठन कर वन क्षेत्र के जल संसाधन के प्रबंधन में जनता को शामिल कर अधिक संरक्षण की संभावना बताया। जल संसाधन की सुरक्षा, संरक्षण, वृद्धि, उत्तरदायित्व पूर्ण एवं स्थायी उपयोग को विस्तार से समझाया। अशूद्ध जल से पन बिजली घरों के टरबाईन तथा अन्य उपकरण पर पड़ने वाले दुष्प्रभाव को भी बताया। जल शक्ति, वनों में जल, CAMPA तथा पारिस्थितिकी क्षेत्र को जोड़कर बताया तथा wetland, समुदाय की भूमिका, सामुदायिक निगरानी, जल फसल (मखाना आदि), मछली पालन आदि की चर्चा करते हुए जल की स्वच्छता के प्रभाव को भी दर्शाया। गलत योजना अथवा गलत गतिविधि के दुष्प्रभाव को भी समझाया। जनता के संसाधनो का सदुपयोग, पक्षपाती गतिविधि, सरकार और जनता का संबंध सकारात्मक होना चाहिए। CADA, WUA के कार्यों की भी चर्चा की। नोबेल पुरस्कार विजेताओं में जल संसाधन, जल और जंगल के क्षेत्र के लोगों की चर्चा की एवं theory of astrom को बताया। चायवाला के ताल बुरा को एक अनोखी पहल बताया। इस तरह की परियोजनाओं के संचालन में न्यायपालिका की भूमिका बताते हुए जागरुक जनता की सराहना करने पर बल दिया तथा आखिर में वैज्ञानिकों, शोधकर्मियों से Green portal of MoEFCC से मदद लेने की सलाह दी।

संस्थान मे समूह समन्वयक (अनुसंधान), डा. योगेश्वर मिश्रा ने पानी पंचायत का उदाहरण देते हुए शंका व्यक्त किया कि सटे राज्यों जैसे छत्तीसगढ़ और ओडिशा इस संबंध में अलग–अलग मुद्दों के लिए कोई निश्चित समाधान नहीं मिल पा रहा है। साथ ही साथ उन्होंने CAMPA एवं e-portal में अधिकांश वन प्रमंडलों से प्रतिवेदन ही नहीं मिल पाता है। उन्होंने tagging पर भी कुछ समाधान के लिए अनुरोध किया जिसे डा. गुप्ता ने सामान्य शब्दों में शंका समाधान का प्रयास किया। डा. मिश्रा ने इस तरह के

कार्यक्रमों में डा. गुप्ता की सहयोग की आवश्यकता बताया तथा उनके अनुभवों से लाभ लेने की अपील की।

धन्यवाद ज्ञापन करते हुए डा. योगेश्वर मिश्रा ने कार्यक्रम समाप्ति की घोषणा की तथा कार्यक्रम का समापन राष्ट्रगान के साथ किया गया। कार्यक्रम के सफल आयोजन में विस्तार प्रभाग, सूचना तकनीकी प्रभाग एवं सम्पदा प्रभाग की सराहनीय भूमिका रही।

Ministry of Environment, Forest & Climate Change

आज़ादी का अमृत महोत्सव

INSTITUTE OF FOREST PRODUCTIVITY

Cleanliness:
Community Participation in cleaning of rivers of India

Speaker
Shri.H.S.Gupta, IFS
PCCF (Retd.)
Ranchi(Jharkhand)

Date: 10 December, 2021

2:00 PM to 3:00 PM

Cisco webex

https://directorifpranchi.my.webex.com/directorifpranchi.my/j.php?MTID=m0963fe4fae10c93aee6746665aceebb2

http://ifp.icfre.gov.in @ifpranchi1 @ifpranchi

INSTITUTE OF FOREST PRODUCTIVITY, RANCHI
(INDIAN COUNCIL OF FORESTRY RESEARCH AND EDUCATION)
Ranchi Gumla Road, NH-23 Ranchi

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां

आयोजित कार्यक्रम की झलकियां